प्रा. डॉ. यशवंतकर संतोषकुमार

रस किसे कहते हैं ?

रस के अंग

संचारी भाव

विभाव

अनुभाव

स्थाई भाव

रस की परिभाषा

परिभाषा – *किसी काव्य को पढ़ने,सुनने अथवा उसका अभिनय देखने में पाठक,श्रोता या दर्शक को जो आनंद मिलता है वहीं काव्य में रस कहलाता है।*

रस के अंग

स्थाई भाव,विभाव,अनुभाव व संचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। रस के अंग चार प्रकार के होते हैं।

- 1 स्थाई भाव
- 2 विभाव
- 3 अनुभाव
- 4 संचारी भाव (व्यभिचारी भाव)

1 - स्थायी भाव

मन के अंदर स्थाई रूप से रहने वाला भाव स्थायी भाव कहलाता है। प्रत्येक मनुष्य के मन में प्रेम, दुख, क्रोध आदि स्थायी भाव, स्थायी रूप से विद्यमान रहते हैं। यह हमारे हृदय में छिपे रहते हैं, और अनुकूल वातावरण मिलने पर स्वयं ही जागृत हो जाते हैं।

2 - विभाव

जो कारण हृदय में स्थित स्थायी भाव को जागृत तथा उद्दीप्त करें, उन्हें विभाव कहा जाता है। यह दो प्रकार के होते हैं।

आलंबन विभाव

उद्दीपन विभाव

आलंबन विभाव

जिन व्यक्तियों या पात्रों के सहारे से स्थायी भाव उत्पन्न होते हैं, वे आलंबन विभाव कहलाते हैं। जैसे - सर्कस में जोकर को देख कर हंसी आ गई इस हास्य नामक स्थायी भाव को जागृत करने वाला जोकर आलंबन कहलाता है।

आलंबन के भी दो प्रकार होते हैं। एक आश्रय विभाव दो विषय विभाव।

उद्दीपन विभाव

स्थायी भावों को उद्दीप्त या तीव्र करने वाले कारण उद्दीपन विभाव कहलाते हैं।

जैसे - सीता को देखकर राम के ह्रदय में रति नामक स्थायी भाव तीव्र हो गया। यहां सीता का सौंदर्य उद्दीप्त विभाव कहलायेगा।

3 - अनुभाव

जिन चेष्टाओ के द्वारा भावों का अनुभव होता है, उसे अनुभाव कहते हैं। अर्थात भावों का अनुभव कराने वाले अनुभाव कहलाते हैं।

जैसे- शेर को देखकर घिग्घी बंध जाना भागने की कोशिश करने पर भी भाग ना पाना यह चार प्रकार के होते हैं।

4 - संचारी भाव / व्यभिचारी भाव

यह स्थाई भाव को पुष्ट करके नष्ट हो जाते हैं। यह पानी में उठने वाले बुलबुला की तरह होते हैं। जो उठते हैं, और लुप्त हो जाते हैं। संचारी भाव की संख्या 33 मानी गई है।

इस व्हिडियों / PPT का उदेश्य केवल अध्यापन के लिए है, न कि प्रसिद्धी पाने के लिए। इसका समग्र श्रेय सभी महानुभवों को जाता है जिन-जिनकी सामग्री का उपयोग यह बनाने के लिए हुआ है। मैं उन समस्तजनों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हुँ जिनकी सामग्री का उपयोग यह व्हिडियों / PPT के लिए हुआ है। यह मेरी कोई मौलिक उपलब्धी नहीं है और न ही कोई सृजनात्मकता। इस का उदेश्य केवल और केवल छाञों तक पहुँचाना हैं। इससे किसीके दिल को प्रत्यक्ष या परोक्षरुप से कोई ठेस या आहत पहुँचती है तो मैं उसके लिए क्षमाप्रार्थी हुँ - आपका प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर

JAI BHAWANI SHIKSHAN PRASARAK MANDAL'S

ARTS & SCIENCE COLLEGE SHIVAJINAGAR, GADHI

जय भवानी शिक्षण प्रसारक मंडळ, गेवराई संचलित (कला व विज्ञान महाविद्यालय शिवाजीनगर, गढी ता . गेवराई जि . बीड)

प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर